ज्वालामुखी योग - 20

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अनेक भक्तों को जो दर्शन के अभिलाषी हैं, **ऐसे दर्शन-अभिलाषी आत्माओं के सामने आप स्वयं दिव्य दर्शन मूर्त प्रत्यक्ष होंगे** तब ही सर्व आत्मायें दर्शन कर प्रसन्न होंगी। और प्रसन्ता के कारण आप दिव्य दर्शनीय आत्माओं पर प्रसन्ता के पुष्प वर्षा करेंगी। हरेक आत्मा के द्वारा यही प्रसन्नता के बोल निकलेंगे, जन्म-जन्म की जो प्यास थी वा आश थी कि मुक्ति को प्राप्त हो जाएँ वा एक झलक मात्र दर्शन हो जाएँ, आज मुक्ति वा मोक्ष का अनेक जन्मों का संकल्प पूरा हो गया। वा दर्शन के बजाए दर्शनीय मूर्त मिल गए। हमारे ईष्ट हमें मिल गए।

➳ _ ➳ इसी थोड़े समय की प्राप्ति के नशे और खुशी में जन्म-जन्म के दुख दर्द भूल जायेंगे। **थोड़े से समय की यह समर्थ स्थिति आत्माओं को यथाशक्ति भावना के फलस्वरूप कुछ पापों से भी मुक्त कर देगी।** इसलिए आत्मायें स्वयं को यथा शक्ति हल्का अनुभव करेंगी। इसलिए ही पाप हरो देवा वा पाप नष्ट करने वाली देवी, शक्ति, जगत मां यह बोल जरूर बोलते हैं। किसी भी देवी वा देवता के पास जाते हुए यह भावना वा निश्चय रखते हैं कि यह हमारे पाप नाश कर ही लेंगे। और अब अन्त में देवताओं के साथ गुरू लोग भी यही टैम्पटेशन देते हैं कि मैं तुम्हारे पाप नाश कर दूँगा। भक्त भी इसी भरोसे से गुरू करते हैं।

➳ _ ➳ लेकिन **यह रसम आप दिव्य दर्शनीय आत्माओं से प्रत्यक्ष रूप में होने का यादगार चला आ रहा है।** ऐसे जल्दी ही यह दिव्य दृश्य विश्व के सामने आया कि आया! अभी अपने आपको देखो कि हम दिव्य दर्शनीय मूर्त दर्शन योग्य, सर्वश्रृंगार सम्पन्न बने हैं? **बाप समान पाप कटेश्वर स्वरूप में स्थित हैं?** पाप कटेश्वर वा पाप हरनी तब बन सकते,

जब याद के ज्वाला स्वरूप बनेंगे-ऐसे बने हैं? (21.11.1984)

➢➢ दर्शनीय मूर्त बनने के लिए क्या करें ?

➢➢ जड़ मूर्ती और चैतन्य मूर्ति का Comparison

➳ _ ➳ सुन्दरता

→ आंतरिक सुन्दरता / रूहानी सौन्दर्य

➳ _ ➳ आकर्षक

→ आंतरिक शुधि से रूहानी आकर्षण

➳ _ ➳ हर्शितमुख

➳ _ ➳ दिव्यता

→ लोकिकता का नामो निशान न हो

➳ _ ➳ परिधान (वस्त्र)

→ भिन्न स्वमानो की ड्रेस पहननी है

- बाप के गुण बच्चों के स्वमान हैं

➳ _ ➳ श्रृंगार / आभूषण

→ गुणों का श्रृंगार

➳ _ ➳ माला

→ गुणों की माला

➳ _ ➳ मुकुट

→ जिम्मेवारी का ताज

- कर्तव्य निभाते निभाते हो हम ज्ञान योग में आगे बड सकते हैं अन्यथा नहीं

➳ _ ➳ शक्ति संपन्न

→ कोई घबराहट नहीं / कोई डर नहीं

➳ _ ➳ वरदानी मूरत

➳ _ ➳ साक्षातकार मूरत

→ पांच प्रकार के साक्षात्कार

- आत्मा का
- परमात्मा का
- परमधाम का
- सतयुग का
- विनाश का

➳ _ ➳ अनेकों भुजाएं

→ सहयोग की भुजाएं

- Variety सेवाएं करना - हरफनमौला (आल राउंडर बनना है)

➳ _ ➳ अस्त्र और शस्त्र

→ ज्ञान के पॉइंट्स और योग के प्रयोग के भिन्न अस्त्र शस्त्र होने चाहिए

→ अस्त्र

- ध्यान (योग) करने पर प्रकट होते हैं

→ शस्त्र

- यह already पहले से होते हैं ... तरकश से निकालने होते हैं

➳ _ ➳ हर मूर्ती का वाहन होता है

→ श्रेष्ठ संकल्पों का वाहन

- जब चाहे ब्रेक लगाने की भी शक्ति होनी चाहिए

➳ _ ➳ आभामंडल (औरा)

➳ _ ➳ तिलक

→ आत्मा परमात्म और ड्रामा की स्मृति का तिलक

➳ _ ➳ संहारी मूर्त

→ राक्षसों (विकारों) का नाश करना